Quadrant II – Script

Programme: Bachelor of Arts (Third Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 105

Paper Title: आधुनिक हिंदी काव्य का इतिहास

Unit: III

Module Name: जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत

Name of the Presenter: Ms. Chatura R. Sinai Sancordeker

नमस्कार,

मैं चतुरा साकोर्डेकर उच्च शिक्षा निदेशालय गोवा के ऑनलायन सामग्री प्रकल्प के अंतर्गत बी.ए. के पंचम क्षेत्र में हिंदी पाठ्यक्रम के **HNC – 105** 'आधुनिक हिंदी काव्य का इतिहास' के अंतर्गत 'प्रमुख हिंदी कवि: सामान्य परिचय' अध्याय से 'जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पंत' इन कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित कराने जा रही हूँ।

बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न महान कवि जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रमुख चार स्तंभों में से एक हैं। वे अपने प्रारम्भिक काल में ब्रजभाषा में कलाधर उपनाम से रचनाएं लिखा करते थे। छायावाद की महत्वपूर्ण पत्रिका 'इंदु' का संपादन कार्य उन्होंने किया। शैव दर्शन से प्रभावित होने के कारण वे नियतिवादी विचारधारा के साहित्यकार थे।

सन् **1889** इसवीं में जयशंकर प्रसाद जी का जन्म वाराणसी में हुआ। परिवार का साहित्यिक वातावरण प्रसाद जी में काव्य संस्कार ढालने का कारण बना। संस्कृत, हिंदी और फारसी में आपने शिक्षा ग्रहण की। **15** नवम्बर **1937** में वाराणसी में इनका देहांत हुआ।

रचनाकार के रूप में इन्होंने हिंदी साहित्य को बहुत बड़ा योगदान दिया है। उनकी काव्य रचनाओं में 'कामायनी' पौराणिक कथा सूत्रों से युक्त, जिसमें मानव मनोविज्ञान और दर्शन का समन्वय है, आधुनिक हिंदी साहित्य का श्रेष्ठतम महाकाव्य है। 'प्रेम पथिक' और 'महाराणा प्रताप' उनके खंडकाव्य हैं। 'आँसू', 'चित्राधार', 'झरना' और 'लहर' गीतिकाव्य हैं तथा 'करुणालय' उनका नाट्य काव्य है।

गद्य रचनाओं में 'कंकाल', 'तितली', तथा 'इरावती' उपन्यास; 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'आंधी' और 'इंद्रजाल' कहानी-संग्रह; 'सज्जन', 'विशाख', 'करुणालय', राज्यश्री', अजातशत्रु', 'कामना', 'चन्द्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त', 'विक्रमादित्य', ध्रुवस्वामिनी' आदि नाटक और 'काव्यकला' तथा 'अन्य निबंध' उनके निबंध संग्रह रहे हैं।

जहाँ तक प्रसादजी की काव्य विशेषताओं का सवाल है, पहले स्थान पर हैं प्रेम और सौन्दर्य का वर्णन। इनकी कविताओं में मानव, प्रकृति तथा ईश्वर से प्रेम व्यक्त हुआ है। इनका प्रेम किसी सीमा में बंधा हुआ नहीं है। इनके प्रेम में सौन्दर्य का वर्णन है, जो सूक्ष्म भावों से भरा है।

उनके काव्य की दूसरी खास विशेषता रही है रहस्यवादी भावना। अज्ञात सत्ता के प्रति विश्वास का भाव उनकी अनेक कविताओं में व्यक्त हुआ है।

वेदना की अभिव्यक्ति उनके काव्य की तीसरी विशेषता रही है। मानव हृदय की वेदना का मार्मिक चित्रण स्वानुभूतियों के आधार पर हुआ है। कवि हृदय की आशा-निराशा, सुख-दु:ख और राग-विराग का मर्मस्पर्शी चित्रांकन 'लहर', 'आँसू' आदि काव्य-संग्रहों में देखने को मिलता है।

नारी भावना के अंतर्गत कवि ने नारी में देवी गुणों का दर्शन कराया है। 'नारी तुम श्रध्दा हो' कहकर नारी को उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया।

प्रसाद जी के काव्य की अगली विशेषता नवीन जीवन दर्शन है, जिसके तहत हम पाते हैं कि उन्होंने युगीन विघटन एवं पतनकारी प्रवृत्तियों का स्वच्छंदवादी दृष्टि से विद्रोह किया। काव्य और दर्शन का अद्भुत समन्वय कर उन्होंने युग और देश की चेतना को काव्य के माध्यम से मुख-स्वर दिया।

मानवतावाद की स्थापना भी उनके काव्य की एक और महत्वपूर्ण विशेषता रही है। वे मानवीय मूल्यों के प्रबल समर्थक रहे हैं। उनके मत से अगर प्रकृति में भेद नहीं तो मानव जाति में क्यों? समानता के स्तर पर ही मानवीय मूल्यों को संरक्षण प्राप्त होना संभव है। प्रकृति वर्णन छायावाद की प्रमुख विशेषता रही है। प्रसाद के काव्य में प्रकृति आलंबन तथा उद्दीपन रूप में प्रस्तुत हुई है।

भाषा शैली के अंतर्गत हम पाते हैं कि प्रसाद ने अपने भावों को युग और परिवेश की अपेक्षा के अनुसार खड़ीबोली में ढाला। संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग अधिक पाया जाता है। ओज, माधुर्य तथा प्रसाद तीनों गुणों का प्रयोग किया गया है।

हमारे दूसरे कवि, जिनका हम अब परिचय करने जा रहे हैं, वे हैं प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत। पंत जी भी छायावाद के प्रमुख कवियों में से एक रहे हैं। प्रकृति के सत्यं, शिवं

तथा सुंदरम आदर्शों से वे प्रभावित रहे। अपने जीवन के अंतिम चरण में वे प्रगतिवादी विचारधारा से जुड़े। एक युग प्रवर्तक कवि के रूप में उन्हें जाना जाता है।

पंत जी का जन्म **20** मई **1900** ई. में अल्मोड़ा जिले के पर्वतीय क्षेत्र के कौसानी गाँव में हुआ। बनारस के प्रसिध्द क्वींस कालेज से उन्होंने हाईस्कूल की शिक्षा प्राप्त की। उन्हें पद्मभूषण, ज्ञानपीठ, सोवियत सरकार के नेहरू शांति पुरस्कार तथा अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। **28** दिसंबर **1977** ई. में उनका निधन हुआ।

रचनाकार के रूप में उन्होंने 'उच्छ्वास', 'ग्रन्थि', 'वीणा', 'पल्लव', 'गुंजन', 'युगांत', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'अतिमा', 'कला और बूढ़ा चाँद', 'चिदम्बरा', 'लोकायतन' आदि की काव्य-संग्रहों की रचना की। गद्य रचनाओं में 'हार' नामक उपन्यास, 'पाँच कहानियाँ' नामक कहानी-संग्रह' तथा 'साठ वर्ष: एक रेखांकन' आत्मकथात्मक संस्मरण की रचना की।

काव्यगत विशेषताओं में प्राकृतिक सौंदर्यबोध पंत जी के काव्य की प्रमुख विशेषता रही है। वे सौन्दर्य के कवि हैं। उनकी रचनाओं में प्रकृति का अत्यंत सुकुमार, सुकोमल रूप व्यक्त है। प्रकृति प्रेम और उसके शाश्वत सौन्दर्य की चेतना का दर्शन काव्य में अभिव्यक्त है। शब्द विन्यास अत्यंत सुन्दर रूप में व्यक्त है। प्रकृति के माध्यम से प्रेम, लज्जा, सौन्दर्य तथा साधना के विविध आयाम बड़ी कुशलता के साथ चित्रित है।

पंत जी के काव्य की दूसरी विशेषता दार्शनिक एवं सांस्कृतिक विचारधारा है। उनका विश्वास है कि भौतिकवाद और अध्यात्मवाद के समन्वय से ही मानव और हृदय का विकास संभव है। वे गांधी, मार्क्स और अरविन्द तीनों से प्रभावित होकर लिखते रहे।

मानवतावाद के अंतर्गत हम देखते हैं कि पंत जी के काव्य में मानवीय मूल्यों की गरिमा संरक्षित है। उनके मत से जातीय बंधन ढीले होने पर मानव धर्म की स्थापना संभवित है।

सामाजिक चेतना से संबंधित पंत जी का काव्य मार्क्सवादी जीवन दर्शन से प्रभावित हो समानता की स्थापना के लिए किसी भी प्रकार की सामाजिक विषमता को ठुकराने को तत्पर है।

जहाँ तक पंत जी के काव्य की भाषा शैली का प्रश्न है, उन्होंने खड़ी बोली हिंदी कविता को छंद के बंधन से मुक्ति दिलाई। उनकी काव्य भाषा से खड़ी बोली ने नवजागरण की चेतना, नया सौंदर्यबोध, कल्पना की नई चित्र शक्ति और शब्द चैतन्य का औचित्य पाया। उनके काव्य में अलंकारों का प्रयोग साधन रूप में रहा।

प्रमुख छायावादी हिंदी कवि जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पंत से संबंधित अधिक जानकारी के लिए संदर्भ ग्रंथ दिए गए हैं। जिसकी सहायता से आप अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

धन्यवाद !